टेढ़ा माड ।

टेढ़ा माड । उस नारियल पेड़ *(माड)* से कुछ दूरी पर रहता था खुशाली रामा । यह था उसका पूरा नाम, चिर परिचित। खुशालीरामा के साथ नारियल पेड़ की कोई रिश्तेदारी नहीं, लेकिन दोनों में काफी समानताएँ थी। खुशाली रामा माँस का गोला नहीं था, बल्कि हड्डियों का एक पुलिंदा था। माड की तरह ही डंडे जैसा ऊँचा। माड की पीठ का मानो इंद्रधनुष का आकार हुआ था, वैसे ही खुशाली रामा को भी समय ने पैरों की करांगुली को और चोटी को पकडकर मटर की फली की तरह कमर से नीचे तक झुकाया था। हम नारियल पत्तियों की तिल्लियों की जैसे गिनती कर सकते हैं, वैसे ही खुशाली रामा के रीड की हड्डियाँ भी गिन सकतें हैं। नारियल पत्तियों के मूल को जैसे पहचान सकते हैं, वैसे ही रीड की हड्डियों के आरंभ तक भी पहुँच सकते हैं।

आज भी माड हवा के साथ डोलता है, रंग फीका पडने पर भी अपने आप से हरे भरे होने का आभास करवाता है। किसी की शक होने नहीं देता है। माड के नन्हें - नन्हें फल वैसे ही टूट पडते है जैसे मन की इच्छाओं के गुच्छे। नारियल पेड के गुच्छे से दो *वाज*[1] वैसे ही लटकते हैं, जैसे उसकी दोनों आँखो की पुतलियाँ। माड और उसमें बहुत

सी समानताएँ है।

खुशाली रामा की यह बातें अलगाकर भी माड ने जो कुछ देखा था उसे भी अनदेखा नहीं किया जा सकता।

उस वक्त रुमड गाँव का प्लाण्ट बहुत प्रसिद्ध था। वहाँ से निर्यात होनेवाला लोह पैसठ ग्रेड का था। इस माल को खरीदने वाले भी बहुत थे। साकोड्डे-गवाणे गाँव से बडी संख्या में ट्रक यहाँ आकर लोह खाली करते थे। दोपहर में पानी की चमक तरह वैसे ही धूप में लोह चमक रहा था, जैसे बिन ब्याही लडकियों के माथे पर चमकने वाली बिंदी। लोह मिश्रित मिट्टी से व्याप्त जगह दिन-प्रतिदिन बढ रही थी। एक दिन वह बढते - बढते नारियल पेड के पास पहुँच गयी। अर्थात सीधे नदी के पास। लोह ने वहाँ का पूरा स्थान घेर लिया था। अब तो नारियल पेड की कमर तक सिर्फ दाग रह गया है, जिस से पता चलता है कि वहाँ तक लोह मिश्रित मिट्टी की ऊँचाई थी। उस समय नारियल पेड को ना कुछ महसूस हुआ ना ही किसी चीज में कोई बाधा आयी थी। आकाश को छूता हुआ माड का माथा था। कमर तक डाली हुई मिट्टी से उसे सहारा मिल रहा था। उस समय उसके पत्ते भी नहीं थरथराए । लोह मिश्रित मिट्टी को नापने का कार्य भी तिल्लियों से अच्छी तरह होने लगा था। कोमल तने को बिना झुकाये उसका कार्य बहुत दिनों तक चलता रहा।

नारियल पेड को जब एहसास हुआ था तब कमर तक डाली हुई इस लोह - मिट्टी ने उसके गले तक की शक्ति खत्म की थी। सर्वस्व का शोषण हो गया था। लोह मिट्टीने मूल को शुष्क बनाकर छोडा था। कुछ भी निर्मित करने की क्षमता नहीं रही थी। उस समय से पत्तियाँ मुरझा गयी थी और फटे दूध की तरह छाया बिखर गयी थी।

लेकिन एक बात सच है, शादी होने के बाद सालू जब रुमड प्लाण्ट पर आ गयी थी तब नारियल पेड की यह स्थिती नहीं थी। तब वह बार - बार उसकी छाया में आराम कर रही थी। पर माड को खोखला बनाया था उस लोह - मिट्टी ने और रह गयी थी सिर्फ *वाज* जैसी दो आँखे।

शालू रूपवान थी, फिर भी ढाई-तीन रुपयों की कमाई के लिए मजदूरनी बनी थी। तब रुमड प्लाण्ट पर सुबह से शाम तक साडेतीन सौ टन के जहाजों में माल भरा जाता था उस समय मिट्टी भरने के यंत्र नहीं थे। बंदरगाह पर मजदूरनियाँ लोह मिश्रित मिट्टी जहाज में डालती थी। कोटुयाकी जेटी (बंदरगाह) पर पैरों की हलचल बढ जाती थी। कभी-कभी किसी-किसी का पैर फिसल जाता था, लेकिन धांदली में किसी की नजर में वह नहीं आ पाता था। पत्थरों की गडगडाहट में सब कुछ खो जाता था।

धूप की प्रखरता टोकरियों के ऊपर ही रहती थी। खाने के लिए छुट्टी हो जाती थी। शालू नारियल पेड की छाँव में आ जाती थी। भारी तेज धूप से बचने के लिए नारियल पेड की छाँव काम आती थी। उसकी छाँव में उसे मनचाहा सुख मिलता था। उसके रहन-सहन में भी एक तरह की मर्यादा थी।

एक दिन माड ने महसूस किया कि उसमें कुछ कमी आ गयी है। नारियल पेड ने छॉव देने का आभास निर्माण किया, पर वह सक्षम नहीं था। एक दिन दोपहर में जब उसे छॉव की अत्यन्त जरूरत थी, उसने गर्दन ऊपर उठा के देखा तो उसे नारियल पेड की निर्बलता का अहसास हुआ, वह मौन रही। माड ने भी मौन स्वीकारा।

वह उठी और उसने चारों ओर देखा नदी के किनारे उसने देखा कि हराभरा *मेणकुंबयो* [2] पत्तियों की पीछे से आँख मार रहा था। उसकी गहरी छॉव पाकर बार-बार उसकी ओरजाने को मन ललचाने लगा।

शालू ने जी भर के आराम किया । माड ने अपनी आँखो से गर्दन टेढी कर के देखा। शालू ने गमछेसे अपना पसीना पोंछा गम छें ने पसीना ऐसे सोख लिया जैसे धरती पहली बरसात की बूँदों को सोखती है। सर से पगडी उतार ली, हवा ने मन-मर्जी वालों को उडाया। ब्लाउज के बटन थोडे ढीले किए। तब हवा के न चलते भी पेड की टहनियाँ धीरे से नीचे झुकी। इतने से जब मन तृप्त नहीं हुआ, तब उसने नौ गजी साडी की पीछे खोंसी हुई चुन्नटों को मुक्त किया और हवा जंघाओं से होकर बहने लगी। उसके बाद चुन्नटों को खोंसने का बहुत प्रयास किया पर वह इसमें कामयाब नहीं हुई। सच्चाई यह थी कि उस समय माड की गर्दन झुकनी चाहिए थी पर वह यह सोचकर खडा रह गया कि कहीं टूट न जाऊँ।

माड के पास में ही शालू का घर है। घर, अर्थात् कुटिया, चार खम्बों पर टिकी हुई। सुपारी के बांस और नारियल पत्तों का छाजन। वैसे तो माड को झोंपडी में चल रहे क्रियाकलाप, अस्पष्ट ही सही पर दिखाई देते हैं। वह स्पष्ट रूप से न दिखने पर अंदाज तो लगाएँ जा सकते है।

शालू आज भी रूमड प्लाण्ट पर काम करने जाती है। वहाँ आधुनिक यंत्रों की वजह से मजदूरनियों की जरूरत उतनी नहीं है जैसे पहले थी। छोटा - मोटा काम करने के लिए ही उनको काम पर रखा गया है - जैसे हाजिरी लगाना, सँपल निकालना, लोह मिश्रित मिट्टी भरने के लिए आनेवाले ट्रकों को तट के पास कतार में खडा करना, कभी - कभी प्लांट - सुपरवायझर का काम करना। इस स्थान पर पुरुष - स्त्रियाँ एक साथ काम करती है। औरत को देखने के बाद पुरुष कुछ गलत - सलत बातें करते हैं। बिन व्याही लडकियों के पीछे तो हाथ धोकर लगे रहते हैं। शादी शुदा औरतों को भी नहीं छोडते। शालू देखने में सुंदर है, सुगठित, थोडी आलसी, पर सुपरवायझर उसपर कभी भी नाराज नहीं होता हैं। शालू को गलत बातों पर गुस्सा आता है। किसी के छेडने पर वह अपने मंगलसूत्र पर हाथ रखकर पति के अस्तित्व का स्मरण दिलाती है। उसके रास्ते में टाँग अडाने वालों को क्षमा नहीं करती। नीचे झुकते हुए आँचल खिसकने नहीं देती।

साडी के ऊपर कमर पर बंधा हुआ गमछा छोडते वक्त ना उसके घुटने दृष्टिगोचर होते हैं, ना ही ब्लाउजके अंदर से ब्रा का पट्टी। ना किसी पुरुष को पास आने देती है, ना ही किसी सुपरवायझर के पास गपशप करने जाती है। ना किसी मजदूर के मामले में टाँग अडाती है। अपनी इज्जत पर आँच नहीं आने देती है, ना स्वयं किसी से कुछ कहती है, ना ही दूसरों का कहा हुआ सहन करती है। शेष मजदूरनियाँ उसे टोकती भी हैं -

''रहने दो जी, क्यों बूरा मानती हो?''

''क्यों सहन करूँ, हमारी भी इज्जत-आब्रु है।''

कोई कुछ बोले तो झल्ला उठती है, पूरा दिन गालियाँ बकती रहती है। और शाम होने पर सुपरवायझर को घर के कामों का कारण बताकर आधा घंटा पहले ही खिसक जाती है और दिन ढलने से पहले घर पहुँचती है।

पेटक के पास पाँव खीचकर उकडूँ बैठा हुआ खुशालीरामा उसे आते देखकर जल्दी - जल्दी खास लेता है। उसके द्वारा जोर - जोर से पुकार ने पर भी ठूंठ की तरह खडा हो जाता है। और कीवाड पर थूंकने के

बजाए निगल जाता है। वहा, थर - थर कॉपने लगता है। उसके काम पर जाने के बाद जो जो घटा हुआ था उसके बारे में बताता रहता है। कौन मछली लेकर आया था? आज रात भोजन के लिए कौन आनेवाला है? उसने कितने बजे तक आने का संदेश भेजा है? यह सब बताते-बताते मछली साफ करके रखने की बात भी एक ही सांस मे बता देता है, क्योंकि उसे खॉसने की ढाँस आ रही होती है।

शालू नहाने की तैयारी करती है। वह पानी गरम करके रखता है पर थोडा सा ठंडा होने पर भी वह गुस्सा होती है। चुप्पी साधते हुए वह चूल्हें में आग जलाने जाता है। वह पहने हुए कपडे निकालकर नहाने के लिए धोती लपेटती है। वह चूल्हा जलाने के लिए फूँकता है लेकिन वह फूँक चूल्हे के बाजुओं से टकराती है। जब वह सीने पर हाथ रखकर गरम पानी में लोटा डुबोकर नहाने के लिए शुरूवात करती है तब उसके वहाँ से बाहर न जाने पर उसपर चिल्लाती है। हमेशा की तरह झोंपडी के पास ट्रक घर्र-घर्र करने लगता है। उसी समय झोंपडी में जब उसकी खॉसी की ढाँस बढती है, तब वह कपडे पहनते वक्त उसे कोंसती है-

''खाँसते खाँसते मरता भी नहीं''

ऐसा कहती जरूर है लेकिन उस की दिली मंशा यही नहीं होती। हमेशा वाली जगह पर 'डी' ट्रेडमार्क का बारह दस, टाटा मर्सीडस ट्रक रुक जाता है। इन की जान-पहचान तो रुमड प्लांट से होती है। यह ड्रायव्हर प्लाण्ट पर सालू से बहुत बार मिलता है पर वहाँ वे एक शब्द भी नहीं बोलते। ड्रायव्हर इंजिन की गर्मी वहीं छोडकर कॅबीन से नीचे उतर जाता है। खामख्वाह आगे-पीछे देखता है, जानी-पहचानी राह से पैर अपने आप झोंपडी की ओर चल पडते हैं। पगडंडी जल्दी ही खत्म हो जाती है। ड्रायव्हर को अंधरे में देखने पर वह खॉसते - खाँसते उठ जाता है। अंदर की ओर जाता है, शालू गमछे से पानी सोखती है। वह जल्दी - जल्दी कहता है-

'वह आया है, तुम एक अठन्नी दे दो,

पुलिया के पास जाकर एक अद्धा पीकर आता हूँ।'

वह आगे पीछे न देखते हुए अठन्नी निकालकर उसके हथेली पर रखती है। इस गडबडी में शालू के सीने पर से गमछा नीचे तक सरक जाता है, लेकिन अठन्नी पाने की खुशी में वह अनदेखा करता है। वह खाँसते खाँसते जल्दी - जल्दी पैरों को उठाता हुआ वहाँ से खिसक जाता हैं, अंदर जानेवाले व्यक्ति की ओर देखे बिना जो बाद में सालू के गोरे बदन पर वह ऐसे डँसता है जैसे गुड़ पर चीटा।

वह खाँसते बाहर जाता है, मुट्ठी में अठन्नी भींच तेहुए। पुलिया पर लोग कहते है - यह है शालू का पति-खुशाली रामा!

(मूल कोंकणी कथा - 'माड' - पुंडलीक नारायण नायक)

अनुवाद : डॉ. वृषाली सुभाष मान्द्रेकर

हिंदी विभाग,
गोवा विश्वविद्यालय,
ताळगाव पठार, तिसवाडी, गोवा - 403206
दूरध्वनी : 2475409